रात्रीक्लास 15-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

जिसकी जयन्ति मनाते हैं उनके तिथ-तारीख को सब जानते हैं। सिर्फ कृष्ण जयन्ति-शिव जयन्ति इनके तिथ-तसरीख को नहीं जानते हैं। विष्णु जयन्ति, ब्रहमा जयन्ति तो मनाते ही नहीं। न तो शंकर की ही मनाते हैं। शिव-शंकर जयन्ति कक लिखते ही नहीं। शिवजयन्ति-गीता जयन्ति मनाते हैं। परन्तु तिथ-तारीख को नहीं जानते हैं। न उनके असेम्बु आक्येपुशन को ही जानते हैं। यही तुम बच्चों को समझाना है। तुम बच्चों ने जो पाईन्ट लिखी है वह देहली भेज दी है। मुरली में भी चलाया था। बच्चे युक्तियां तो बहुत ही निकालते हैं। कैसे जागे। रचता और रचना के नालेज आये पावे। रचता भी बैठे हैं तो रचता के बच्चे भी बैठे हैं। रचना के आदि, मध अन्त का राज़ राज़ रचता ही समझते हैं।

मनुष्य कैसे जाने कि हम नर्कवासी हैं। स्वर्गवासी नहीं हैं। यह समझाना है। एरोपलेनों गिराने वाले पर्चों में भी यह लिख सकते हैं जो मनुष्य समझे हम कलियुगी कौड़ी तूल्य हैं। हीरे तूल्य नहीं हैं। तो दिल होवे हीरे तूल्य होने। पूछना चाहिए कलियुगी दुनिया नर्क के निवासी हो या सतयुगी दुनिया स्वर्ग के निवासी हो? तो मनुष्य समझे कि कलियुग अलग है स्वर्ग अलग है। (बाबा नीचे लिखते पढ़ रहे हैं:-)

"ज्ञान सागर पतित-पावन परम पिता त्रिमूर्ति परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रहमा कुमार-कुमारियों द्वारा सर्व मनुष्य मात्र से कल्प के इस संगम युग पर प्रश्न पूछ रहे हैं कि: -

कलियुगी पुरानी दुनिया नर्क वासी हो,	या	सतयुगी नई दुनिया के स्वर्गवासी हो?
कलियुगी पतित अर्थात विकारी हो	या	सतयुगी पावन अथवा निर्विकारी हो?
कलियुगी भ्रष्टाचारी देह-अभिमानी हो	या	सतयुगी श्रेष्ठाचारी देही या आत्माभिमानी हो?
कलियुगी रावण राज्य में हो	या	सतयुगी रामराज्य में हो?
कलियुगी मृत्युलोक वेश्यालय में हो	या	सतयुगी अमरलोक शिवालय में हो?
कलियुगी दुःखधाम में हो	या	सतयुगी सुखधाम में हो?
कलियुगी अनेक धर्म, अनेक राज्य, अनेक भाषाओं वाले रावण राज्य में हो	या	सतयुगी एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा वाले सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी रामराज्य में हो ?
कलियुगी भक्ति-मार्ग के दुर्गति में हो	या	सतयुगी ज्ञान-मार्ग के सद्गति में हो?
कलियुगी पतित पत्थर बुद्धि वाले हो	या	सतयुगी पारस बुद्धि वाले हो?
कलियुगी कौड़ी तूल्य हो	या	सतयुगी हीरे तूल्य हो?
कलियुगी कांटों के जंगल में हो	या	सतयुगी फूलों के बगीचे में हो?
कलियुगी दुर्भाग्यशाली हो	या	सतयुगी परमभाग्यशाली हो?
कलियुग मुहताज हो	या	सतयुगी डबलसरताजधारी हो?
परमपिता से विपरीत बुद्धि हो	या	परमपिता से प्रीत बुद्धि हो?

पूछना पड़े कलियुगी नर्क में हो तो अभी फिर सतयुगी स्वर्ग में चलने की तैयारी करो। इसमें और भी एडीशन कर सकते हैं। चाहे तो एरोपलेन से गिरावे। बच्चों ने पाईन्ट्स भी लिखी है भाषणों के लिए। बाबा ने लिखा है कि एक दो बारी रिहरसल करो। लिखो फिर भाषण करो। देखो कोई पाईन्ट भूलते तो नहीं हो। रिहरसल कर फिर भाषण करना चाहिए। अज्ञान नींद में सोये पड़े अब उनको जगाना है। अगर नहीं जगाते हो तो गोया वे पड़े हो। अभी टाईम तो बहुत है। बम्बई में चन्द्रा ने सन्यासी को समझाया। परन्तु वह आवेगा नहीं। अगर आवेगा और जाकर कुछ सुनावेगा तो उनको एकदम भगाये देंगे। ठहर न सकेंगे। यहां तो है प्रवृत्ति-मार्ग। रोटी पकाओ यह करो। सो तो सन्यासी से पहुंच नहीं सकती। कब कहेंगे बर्तन साफ करो। धोबी का काम करो। फिर बाबा कहते हैं हम बच्चों की सर्विस में हैं। गायन है जैसा कर्म वैसा फल... बच्चे कहेंगे बाबा हम बैठे

हैं। बाबा तो है ही देही-अभिमानी। देह-अभिमानी होने की बात ही नहीं। कोई भी काम करने लिए बच्चे तैयार हो जाते हैं। तो बच्चों को ख्याल करना चाहिए हम भी रैस2पाईन्ट पर भाषण करें। भाईयों को जगावें। जगेंगे तो वही जो इस धर्म के होंगे। दूसरे धर्म वाले भी लक्ष्य ले सकते हैं। तुम कहेंगे भारत सतोप्रधान था तो हम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तमोप्रधान बने हैं तो फिर बाप को याद करते2 सतोप्रधान बन जायेंगे। समझाना है अच्छी रीत। जो मनुष्य समझे कि यह ठीक है। चक्र में आते2 हम नीचे गिरे हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। हम सतोप्रधान थे बाप से वर्सा पाया था। फिर सतोप्रधान बनेंगे तो विश्व की बादशाही मिलेगी। तुम आदी सनातन देवी देवता धर्मवाले हैं इसलिए बाप को याद करते हो। बाप कहते रहते हैं जो शिव की पुजारी हो, ना0 की पुजारी हो उनको समझाओ। सच्चा राजयोग अभी बाप बैठ कर सिखलाते हैं। हम सीख रहे हैं औरों को भी कहते हैं आकर सीखो। विनाश के पहले एक धर्म का राज्य-भाग्य ले लो। तुम बच्चे जानते हो हम श्रीमत पर अपनी बादशाही स्थापन कर रहे हैं। अनेक बार स्थापना किया है फिर कल्प2 करते रहते हैं। सतोप्रधान जरूर बनना है याद की यात्रा से। मुख्य पाईन्ट अच्छी रीत पकड़ कर फिर समझाना अच्छा होगा। बाप की याद से ही पावन विकर्मा जीत बनेंगे। यह ल0ना0 विकर्माजीत हैं ना। हार्टफेल मत बनो। पुरुषार्थ करना है। दिल में समझते होहम माला में आ सकेंगे वा नहीं। बड़ा भर्तवा है। इसको ही रूहानी लाटरी कहा जाता है। मौत सब का है। सब खाली हाथ जावेंगे तुम्हारा हाथ भरपूर है। जितना सुख जिसके तकदीर में है वह आकर पायेंगे। तुम योगबल से अपना ब्रे हिसाब-किताब चुक्तु कर रहे हो। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रीक्लास-14-2-68:-सन्यासी कोई आ नहीं सकते। अगर वह कहे हमको यह ज्ञान पसंद है तो उनको एकदम भगा देंगे। सिन्ध में एक सिक्ख को कहा था कि तुम ओमंडलो में जावेंगे तो तुमको खत्म कर देंगे। इस समय पुरुषार्थ करेंगे ही बमगरेब साधारण। मातायें आयेंगी। यदेव तो मातायें ही करेंगी ना। पुरुष बहुत थोड़े। माताओं को वारसपने का है नहीं। अपना जीवन बनाते रहेंगे। बीज बोते रहेंगे। पुरुषों में इतना नहीं रहता है। तुम्हारा ज्ञान है यथार्थ। बाकी हैं भक्ति। वह लोग शास्त्रों को भी ज्ञान कह देते हैं। वह न तो फिलासफी है न ज्ञान है। इसको किसको पता नहीं है, इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान। रूहानी बाप बैठ कर ज्ञान देते हैं यह किसको भी पता नहीं है। बाप को समझे तो बाप से वर्सा जरूर मिले। यह वर्सा है ना। लाखों वर्ष की बात तो याद भी न रहे। तुमको बाप पुरुषार्थ कराते रहते हैं। समझाते रहते हैं टाईम वेस्ट न करो। बाप जानते हैं कोई अच्छी पुरुषार्थ करते हैं कोई कम। बाबा से पूछे जैसे तो बाबा झट बता देंगे। फिरको ज्ञान नहीं देते हो तो थर्ड क्लास में ठहरे। भगवान आकर ज्ञान सिखलाते हैं जो फिर प्रायः लोप हो जाता है। ड्रामा के प्लैन अनुसार यह भक्ति मार्ग हैं इन से कोई मुक्ति को प्राप्त नहीं करते हैं। सतयुग में कोई जा नहीं सकता। कल्प पहले मिशल जितना जो पुरुषार्थ किया है वह करते रहते हैं। कई बच्चे इस बाबा से ही भी रीस करते हैं। परन्तु यह तो दूसरी है ना। और बुजुर्ग है। तो बुजुर्ग से जवानों को थोड़े ही रीस करना चाहिए। तुम सब बानप्रस्ती हो ना। बानप्रस्तियों के आश्रम होते हैं। बाबा वहां एक मास रह कर आया है। बेल लगी थाली ले आये फिर दरवाजा बन्द। जो मिला सो खाया। विचार भी आये ले लेते हैं। होतो तो यही है दाल-भात। अपना कल्याण कर रहे हैं बाप समझ जाते हैं। बाप तो कहेंगे रोज इन के चित्र ल0ना0 के आगे आकर बैठो। बाबा हम आपे श्रीमत पर यह वर्सा जरूर लेंगे। सर्विस कर आपसमान बनाने का शौक चाहिए। सेन्टर वालों को भी लिखता हूं इतना वर्ष पढ़ते हुये किसको पढ़ा नहीं सकते हो। बच्चों को उन्नति तो करनी चाहिए ना। फिनलैण्ड में भी बानप्रस्तियों को जाकर ढूंढना चाहिए। मरने पहले लक्ष्य तो बता दें। वाणी से परे तुम्हारी आत्मा जावे कैसे। पतितात्मा जा न सके। भगवानुवाच तुम याद करो तो तुम वाणी से परे चले जावेंगे। बहुत ही भाताओं को उठाये सकते हैं। परन्तु इतनी तीखी कोई है नहीं। ठहरे हैं। सर्विस तो हर जगह बहुत है। अच्छा गुडनाईट।